ISSN 2348-4683
मूल्यः ₹20 मात्र

पाँचवाँ स्तंभ

सकारात्मक चिंतन एवं विकास का संवाहक

मार्च 2016

वर्ष 10, अंक 108

सं जानीध्वं, सं गच्छध्वम्

इन्द्रधनुष पर मोर नाचा
सबने देखा

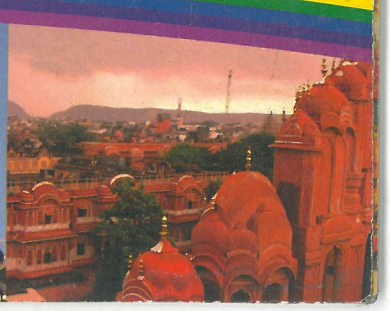

लोकतंत्र का
पाँचवाँ स्तंभ
सकारात्मक चिंतन एवं विकास का संवाहक
वर्ष 10, अंक, 108, (कुल पेज 60, कवर सहित)

संस्थापक संपादक : मृदुला सिन्हा
संपादक : संगीता सिन्हा
सलाहकार संपादक: डॉ. रामशरण गौड़
सह-संपादक : संजय कुमार मिश्र
कला एवं सज्जा : नीता राय
समन्वयक : अमित कुमार

कार्यालय
पी.टी. 62/20, डी.डी. ब्लॉक, कालकाजी,
नई दिल्ली- 110019
ई.मेल : editorpanchwastambh@gmail.com
panchvan.stambh@gmail.com
वेबसाइट : www.sathionline.com
फोन/फैक्स : 011-26231999

शुल्क
एक अंक: ₹20
वार्षिक: ₹220
पाँच वर्षीय: ₹1000
आजीवन के लिए: ₹2500

समस्त चेक/बैंक ड्राफ्ट/मनीआर्डर,
पाँचवाँ स्तंभ (Panchwa stambh)
नई दिल्ली के नाम स्वीकार्य होंगे।

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी
श्रीमती संगीता सिन्हा द्वारा, पी.टी. 62/20,
कालकाजी, नई दिल्ली-110019
से प्रकाशित तथा
एना प्रिंट ओ ग्राफिक्स प्रा.लि.
347-के, उद्योग केन्द्र एक्सटेंशन-II,
सेक्टर-ईकोटेक-II, ग्रेटर नोएडा,
गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र. से मुद्रित

पाँचवाँ स्तंभ
'साथी' (सोशल एक्शन थ्रू इंटिग्रेटेड नेटवर्क) का मासिक प्रकाशन

पाँचवाँ स्तंभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी कानूनी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायालय की अधिकारिता में।

इस अंक में

मंथन
म्हारो रंग-रंगीलो राजस्थान...काईं काईं करा मैं बखान — 04

संकल्प
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता
मृदुला सिन्हा — 06

राजस्थान विशेष
गीतों में जीता राजस्थान
डॉ. बद्री प्रसाद पंचोली — 08

राजस्थान : शौर्य और शृंगार का समन्वय
डॉ. महेश चन्द्र शर्मा — 11

लोक संस्कृति से आकंठ डूबा समाज
डॉ. राम शरण गौड़ — 12

म्हारो राजस्थान
अखिलेश कुमार शर्मा — 15

राजस्थानी स्थापत्य एवं मूर्तिकला
डॉ. जया — 17

राजस्थान : आधारभूत सुविधाओं की जंग जारी
बाल मुकुन्द ओझा — 18

भक्ति और शक्ति की नगरी श्रीनाथद्वारा
प्रेमपाल शर्मा — 20

मीरां बाई की कविताएँ — 23

कविताएँ
वीरों का कैसा हो बसंत
सुभद्रा कुमारी चौहान — 24

फागुन के रंग
डॉ. प्रभा ठाकुर — 24

गंगा अब खेत नहीं पटाती
पंखुरी सिन्हा — 10

सरकार की कल्याणकारी प्रयास
महिला एवं बाल विकास की लोकप्रिय योजनाएँ
अनिता भदेल — 25

साक्षात्कार

राजस्थान विशेष
राजस्थानी होली गीत के बहुरंग
अजीत कुमार पटेल — 32

वैश्विक धरोहर 'जंतर-मंतर'
विधु गर्ग — 34

लोककथाएँ
विजयदान देथा — 35

सरकार की कल्याणकारी प्रयास
राजस्थान सरकार की विकासोन्मुखी नीतियाँ
आशीष कुमार जैन — 36

महिला दिवस
कन्या
गुलाब कोठारी — 39

संस्कृति की संवाहिका राजस्थान की नारी
मृदुला बिहारी — 41

महिलाओं की प्रकृति में ही है पर्यावरण संरक्षण
डॉ. सुचित्रा शर्मा — 44

अभिनव प्रयास
बावड़ियों ने सुलझाई पानी की समस्या
विपिन दिसावर — 46

लापोड़िया : बदहाल गाँव से हुआ खुशहाल गाँव
देवकरण सैनी — 48

व्यंग्य
निन्दास्तुति का मजा भगवत भक्ति में कहाँ
हरि जोशी — 47

कहानी
तिरिया जनम
ऋता शुक्ल — 49

होली
राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानौ है
डॉ. ओम प्रकाश शर्मा — 55

'सत्य के प्रयोग' से
महात्मा गांधी — 57

किस्त-दर-किस्त
संजय कुमार मिश्र — 58

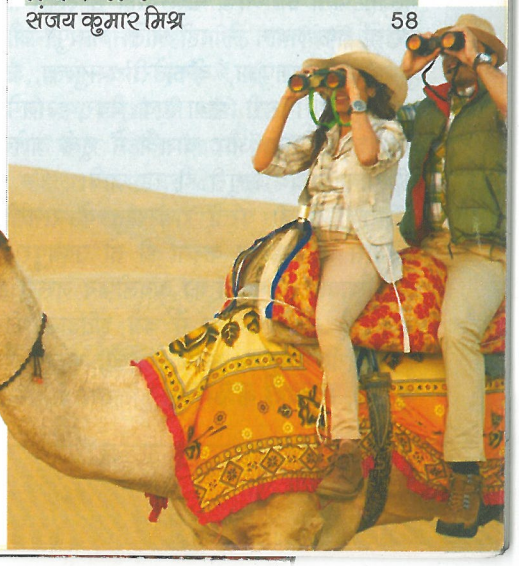

डॉ. सुचित्रा शर्मा

महिलाओं की प्रकृति में ही है पर्यावरण संरक्षण

पहाड़ों, नदियों, वृक्ष पेड़-पौधों को हमने अपनी सुविधाओं के आधार पर इस्तेमाल करना शुरू किया, बजाय इसके कि इन्हें भी पोषण व संरक्षण की आवश्यकता है। जहाँ पहाड़ों की परिक्रमा तीर्थाटन के लिए होती थी, वह पर्यटन के लिए होने लगी।

सन् 80 के दशक से पर्यावरण संरक्षण की सोच के प्रति कार्य प्रारंभ हुआ, परन्तु तब लोगों में इस मुद्दे के प्रति न तो उतनी जागरूकता थी और न ही कोई चिंता। हमारी सोच थी तो, पर हम पर्यावरण के मूल रूप को तथा उसके स्वभाव को समझने के प्रयास में विफल रहे। पृथ्वी की उत्पत्ति से लेकर जीवन के जन्म की कहानी एक जटिल प्रक्रिया रही है। इस छोटे से परिवर्तन ने हजारों वर्ष लगा दिये और कई उतार-चढ़ावों के पश्चात् धरती ने जीवन को जन्म दिया, और हमारे लालन-पालन की सारी सामग्री का इंतजाम भी किया, जो हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपरिहार्य था। जैसे-जैसे विकास परवान चढ़ता गया, हमारी आवश्यकताएँ सुविधाओं के जतन के साथ बढ़ती गई। जितनी अधिक सुविधा उतनी अधिक आधुनिकता, यही मूल मंत्र सारी दुनिया के लिए प्रगति का मापदण्ड बनता गया। हमने इस अंधेपन के पीछे जो दौड़ लगाई कि आवश्यकताएँ सुविधाओं का स्थान लेती गईं, जिसका सीधा असर हमारे पर्यावरण पर पड़ा।

पहाड़ों, नदियों, वृक्ष पेड़-पौधों को हमने अपनी सुविधाओं के आधार पर इस्तेमाल करना शुरू किया, बजाय इसके कि इन्हें भी पोषण व संरक्षण की आवश्यकता है। जहाँ पहाड़ों की परिक्रमा तीर्थाटन के लिए होती थी, वह पर्यटन के लिए होने लगी। नदियों को शाफ्टिंग के लिए, प्राकृतिक सुषमा का उपयोग पिकनिक और मौज-मस्ती के लिए किया जाने लगा। जल के प्रति आस्था केवल पानी बनकर रह गई। परिणाम हम सभी को भुगतना पड़ा। ये स्थान हमारे मनोरंजन के साथ विलासित के प्रयोग के केन्द्र बन गये। इन सबके प्रति आस्था की जगह आवश्यकता ने हमारी संवेदनशीलता खत्म कर दी। जिसका प्रभाव समाज पर सीधे पड़ा ओर समाज भी संवेदन शून्य होने लगा। हम इतने आत्मकेन्द्रित हो गये कि पड़ोस, मोहल्ला या गली, केवल हमारी थोड़ी है, इस भाव से जीने लगे। जब गली या मोहल्ला मेरा नहीं तो देश 'केवल मेरा नहीं' सभी का है। घर का गंदा पानी नाले में आया और नाले का गंदा पानी सहायक नदियों के सहारे या सीधे प्रमुख नदी के जल को प्रदूषित करने लगा। इस तरह संस्कार बदले, सोच बदली और फिर सारा तंत्र तथा व्यवस्था सब प्रदूषित होने लगे।

किसी भी काम की सफलता निर्भर करती है कि काम स्वविचारित, सुविचारित और सुनियोजित और अंतःप्रेरित हो। पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के लिए भी यह जरूरी है कि एक सोची-समझी योजना के तहत कार्य हो, ताकि ज़मीनी स्तर से सभी का जुड़ाव हो और कार्य के प्रति दृढता हो। पर्यावरण संरक्षण की समस्या तो है, पर साथ ही समाधान भी है। हमें अपनी सोच को अपने आस-पास के पर्यावरण के प्रति, अपनेपन के भाव से जो समष्टि हो, जोड़ने की जरूरत है। प्रकृति के साधनों का दोहन कर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना कोई खराब बात नहीं, पर साथ ही यह ध्यान रखने की जरूरत है कि पर्यावरण का पोषण भी होता रहे, जिसके लिए इसकी योजना

बना अमल की शुरुआत भी हमें ही करनी होगी।

भारत में आज वनों की संख्या बहुत अधिक नहीं है। पर्यावरण विशेषज्ञों के अनुसार देश के 33 प्रतिषत भू-भाग पर वन हों, तभी पर्यावरण संतुलन बना रह सकता है। हमने अपनी आवश्यकता पूरी करने के लिए पेड़ों की कटाई की, पर ईंधन के वैकल्पिक साधन खोजना जरूरी नहीं समझा। कृषि के लिए छोड़ी गई जमीन बढ़ती आबादी के बढ़ते निर्माण कार्य के कारण धीरे-धीरे घटती गई। पर्यावरण संरक्षण हेतु हमारी सोच भी दरकिनार होती रही। इस ओर हमारा ध्यान तब गया जब पश्चिमी पर्यावरणविदों ने इनके प्रति चेतना जागरण अभियान चलाया। वरना हम इस बात से अनभिज्ञ रहे कि वस्तुतः देखा जाय तो पर्यावरण संरक्षण के बीज हमारी जीवन शैली का अंग थे। बड़, पीपल की पूजा, घर-घर में तुलसी चौरा, पूजा में फल-फूल, पत्ते चढ़ाना, खुशी के अवसर पौधे रोपना, कुत्ते, गाय तथा कौवे के लिए अग्रास निकालना, चिड़ियों को दाना डालना, घर में यज्ञ-हवन के आयोजनों से वायु शुद्धि, दैनिक स्नान, पानी का यथोचित प्रयोग, नदी-स्नान तथा नदियों को महत्त्व देना जैसे तमाम क्रियायें, रीति-रिवाज इस बात के गवाह हैं कि हम पर्यावरण संरक्षण के प्रति अनजान नहीं थे। इनके प्रति हमारी भावनाएँ धर्म एवं आस्था से जुड़ी थीं।

ये क्रियाएँ विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र तथा महिलाओं द्वारा सम्पन्न की जाती रहीं, पर आज हमने संरक्षण के बजाय दोहन को जिस तरह महत्त्व दिया है, जिसकी शिकार ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्र व महिलाएँ हो रही हैं। पेड़ों के कटने से ईंधन के लिए दूर-दराज के क्षेत्रों में जाना, पानी के लिए कई किलोमीटर की यात्रा करना इन महिलाओं की विशेषता थी।

महिला सशक्तीकरण के इस युग में महिला शक्ति के अपव्यय की ओर से हमारी लापरवाही और उपेक्षा क्या उचित है? पर्यावरण संरक्षण के व्यापक प्रचार-प्रसार के बावजूद हमारी ग्रामीण महिलाएँ अपनी तथा परिवार की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में स्वयं को खपा रही हैं। उन्हें इस बात का इल्म भी नहीं कि आज मूल आवश्यकता की पूर्ति हेतु वैकल्पिक उन्नत साधन आ चुके हैं। जानकारी का अभाव, साधनों के प्रयोग के

महिला सशक्तीकरण के इस युग में महिला शक्ति के अपव्यय की ओर से हमारी लापरवाही और उपेक्षा क्या उचित है? पर्यावरण संरक्षण के व्यापक प्रचार-प्रसार के बावजूद हमारी ग्रामीण महिलाएँ अपनी तथा परिवार की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में स्वयं को खपा रही हैं। उन्हें इस बात का इल्म भी नहीं कि आज मूल आवश्यकता की पूर्ति हेतु वैकल्पिक उन्नत साधन आ चुके हैं।

प्रति अज्ञानता, धन की कमी आदि कारक उन्हें विकास के साधनों के प्रति जोड़ ही नहीं पा रहे हैं। सरकारी प्रयासों के क्रियान्वयन की दुरूहता तथा गैरसरकारी संस्थाओं के वैकल्पिक प्रयास आज उतने सशक्त नहीं हो पा रहे हैं।

हालाँकि कई गैर-सरकारी प्रयास इस दिशा में क्रियाशील है। पानी के साधनों के संरक्षण हेतु वे क्षेत्रीय निवासियों में उत्प्रेरक का काम कर रहे हैं। महिलाएँ न केवल अपने घर के कार्यों की संपादन भलीभाँति कर रही हैं बल्कि इन संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सहभागिता से सशक्तीकरण की ओर अग्रसर हैं।

महिलाएँ सही माने में देखें तो प्रकृति के संरक्षण की संवाहिका का कार्य करती हैं। यदि उन्हें सही दिशा-निर्देश मिलें तो समाज के समक्ष मिसाल कायम करती हैं। माता के रूप में वे बच्चों की प्रथम शिक्षिका होती है, ऐसी स्थिति में पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी सजगता आने वाली पीढ़ी में संरक्षण की बुनियाद हो सकती है। माताएँ अपने बच्चों को पारिवारिक वातावरण से जिस तरह जागरूक और अपने परिवार के संस्कारों की संवाहक बनाती हैं, उसी तरह ये पेड़-पौधे, पशु-पक्षी जीव-जन्तु तथा इनकी देखभाल व दया की भावना का प्रस्फुटन कर प्रकृति प्रेम को भी सिखा सकती हैं।

जीवन की आवश्यकता पूर्ति के साधनों के उपयोग के पश्चात् व्यर्थ व अवशिष्ट पदार्थों को प्रकृति को दूषित करने से बचाना सिखा सकती हैं। महिलाएँ चाहे घरेलू हो या कामकाजी, शहरी हो या ग्रामीण, घर के सदस्यों को पर्यावरण के संरक्षण का संदेश देकर जागरूक कर सकती है। ऊर्जा के संरक्षण में ईंधन का सदुपयोग, सौर ऊर्जा का प्रयोग, जल की स्वच्छता और उचित उपयोग से ऐसे कई कार्यों को अंजाम दे सकती हैं, जो हमारे देश के पर्यावरणीय विकास और संरक्षण के प्रति सजग चेतना का वातावरण निर्मित कर सकती हैं।

इसके उनका स्वयं का सचेत और जागरूक होना पहले जरूरी है। घर के अनुपयोगी समान का प्रबंधन, जलाने की बजाय पुनः चक्रीकरण, कार्बनिक अपशिष्टों को वर्मीकल्चर विधि द्वारा जैव खाद में रूपान्तरण, आदि बातें पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचा सकती हैं।

आज हमारे पर्यावरण को सबसे बड़ा खतरा पॉलीथिन बैग के प्रयोग से है। ऐसे तमाम उदाहरण हैं, जो समाज में दुष्परिणाम पैदा कर रहे हैं। इन बैगों में अपशिष्ट पदार्थों को भरकर फेंकने से जानवर उन्हें खा जाते हैं, जो उनकी मौत का कारण बन जाता है। महिलाएँ इन बैगों के उपयोग को रोक सकती हैं।

आज हमारे समक्ष कई ऐसी मिसालें हैं, जिनमें महिलाओं ने अपनी सूझ-बूझ और भागीदारी से जनमानस बदला है। 'चिपको आन्दोलन' ऐसी ही संगठित महिलाओं द्वारा संपादित किया जा रहा है। अल्मोड़ा की महिलाओं ने प्रकृति के इस विध्वंस पर अपनी गर्जना से हमें झकझोर दिया-"पहाड़ का पेट चीरने से पहले, वे हमें मारकर इसी पहाड़ में दफना क्यों नहीं देते?" श्रीमती करमा, श्रीमती गौरा, श्रीमती अमृता देवी, दामी और चीमा ने प्रकृति के साथ अपने संबंधों को मूर्त रूप दे उत्प्रेरणा का स्रोत बनी हैं।

अतः समय रहते चेत जाना श्रेयस्कर है। खुद भी जागें, दूसरों को भी जगाएँ, वृक्षारोपण का महत्त्व बता संरक्षण की महत्ता की बुनियादी नींव डाली जा सकती है और इससे हमारा वातावरण सुरक्षित तथा संवर्धित होगा।

(स.प्रा.) समाजशास्त्र, शा.वि.या.ता. स्व. स्नातकोत्तर, महाविद्यालय दुर्ग, संपर्क : C/2, 150, सूर्यविहार, जुनवानी, भिलाई (मध्य प्रदेश)